

भाकृअप -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान

द्वारा जारी की गई

पटसन एवं समवर्गीय रेशा उगाने वाले किसानों को कृषि-सलाह सेवाएं

05-14 अगस्त, 2020 (निर्गत सं : 15 / 2020)



भा.कृ.अ.प. -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान

ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers

(एक आई. एस. ओ. 9001:2015 प्रमाणित संस्थान)

बैरकपुर, कोलकाता -700121, पश्चिम बंगाल

www.crijaf.org.in



**पटसन एवं समवर्गीय रेशा उगाने वाले किसानों को कृषि-सलाह सेवाएं
(05 अगस्त – 14 अगस्त, 2020)**

I. पटसन एवं समवर्गीय रेशा उगाने वाले राज्यों में अगले सप्ताह मौसम की संभावना

राज्य / कृषि जलवायु क्षेत्र / क्षेत्र	मौसम का पूर्वानुमान
पश्चिम बंगाल का गांगेय क्षेत्र (मुर्शिदाबाद, नदिया, हुगली, हावड़ा, उत्तर 24 परगना, पूर्व वर्धमान, पश्चिम वर्धमान, दक्षिण 24-परगना, बांकुरा, बीरभूम)	अगले चार दिनों (06-09 अगस्त) में हल्की से मध्यम बारिश (46 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 30-35 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान लगभग 26-28 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है।
पश्चिम बंगाल के उप-हिमालयी क्षेत्र (कूचबिहार, अलीपुरद्वार, जलपाईगुड़ी, उत्तर दिनाजपुर, दक्षिण दिनाजपुर और मालदा)	अगले चार दिनों (06-09 अगस्त) में मध्यम से भारी बारिश / गर्जन के साथ बौछारें (92 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 34-36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान लगभग 27-28 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है।
असम : मध्य ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र (मोरीगाँव, नौगाँव)	अगले चार दिनों (06-09 अगस्त) में मध्यम बारिश / गर्जन के साथ बौछारें (88 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 36-39 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान लगभग 26-27 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है।
असम : निचला ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र (गोआलपारा, धुबरी, कोकराझार, बंगाईगाँव, बारपेटा, नलबाड़ी, कामरूप, बक्सा, चिरांग)	अगले चार दिनों (06-09 अगस्त) में हल्की से मध्यम बारिश/ गर्जन के साथ बौछारें (52 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 35-36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान लगभग 27-28 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है।
बिहार : कृषि जलवायु क्षेत्र (उत्तरी पूर्व, पूर्णिया, कटिहार, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, अररिया, किशनगंज)	अगले चार दिनों (06-09 अगस्त) में हल्की से मध्यम बारिश (50 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 33-36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान लगभग 27-28 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है।
ओडिशा : उत्तर पूर्वी तटीय मैदान (बालेश्वर, भद्रक, जाजपुर)	अगले चार दिनों (06-09 अगस्त) में अल्प बारिश से हल्की बारिश / गर्जन के साथ बौछारें (37 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 32-33 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान लगभग 24-25 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है।
ओडिशा : उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्वी तटीय मैदान क्षेत्र (केंद्रपाड़ा, खुर्दा, जगतसिंघपुर, पुरी, नयागढ़, कटक और गंजम के हिस्से)	अगले चार दिनों (06-09 अगस्त) में हल्की से मध्यम बारिश (36 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 32-33 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान लगभग 26-27 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है।

स्रोत : IMD (<https://mausam.imd.gov.in/>) और weather.com

II. पटसन कृषकों के लिए कृषि सलाह

1. समय पर बोया गया (25 मार्च-10 अप्रैल) पटसन (फसल अवधि 130-140 दिन)

फसल कटाई एवं जाक की तैयारी

- फसल की कटाई समय पर (120 दिन की फसल) की जाए, कटाई एवं सड़न में देरी होने से रेशे की गुणवत्ता पर असर पड़ता है, इसलिए कृषकों को सलाह दी जाती है कि समय पर कटाई करें।
- जाक के ऊपर कभी भी कीचड़ या केले का थंब व्यवहार नहीं करना चाहिए। जाक के ऊपर कीचड़ या मिट्टी के सीधे उपयोग से बचना चाहिए, इसके बजाय, किसान पुराने सीमेंट या उर्वरक बैग में कीचड़ या मिट्टी को वजन सामग्री के रूप में रख सकते हैं। पुनः व्यवहार योग्य प्लास्टिक के थैले में पानी भर कर भी वजन सामग्री के रूप में व्यवहार किया जा सकता है।
- गुणवत्ता में सुधार, त्वरित सड़न और उच्चतम रेशे की प्राप्ति के लिए 4 किलोग्राम/बीघा की दर से "क्राइजैफ सोना" पाउडर का प्रयोग कर सकते हैं। जाक बनाते समय पटसन बंडल के प्रत्येक परत पर "क्राइजैफ सोना" का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- "क्राइजैफ सोना" प्रयोग करने वाले कृषक,रेशा को अत्यधिक सड़न से बचाने के लिए, जाक को 8-10 दिनों के बाद जाँच करें।

रेशा निष्कर्षण एवं सुखाना

- 10-20 दिन पुराने जाक में साधारणतया रेशा सड़न हो जाता है, अगर सड़न हो जाता है तो रेशा को डंठल से छुड़ा कर साफ पानी में धोकर उसे धूप में सूखा लें।



1. रेशा निष्कर्षण एवं धुलाई 2. रेशों को धूप में सुखाना 3. रेशों का बंडल बनाना



1. "क्राइजैफ सोना" प्रयोग करने के 10 दिनों के बाद जाक को जाँच करें 2. उचित सड़न प्रक्रिया के लिए जाक को पानी में डूबा रहना चाहिए



120 दिन की फसल की कटाई और उससे पत्ती झड़ने के लिए 3-4 दिनों के लिए जमीन में ही छोड़ना

नजदीकी जलाशय में जाक बनाने की तैयारी

सीमेंट बैग में बालू, पत्थर या मिट्टी को वजन सामग्री के रूप में जाक के ऊपर रखते हैं ताकि ये पानी के नीचे चला जाय

2. 15 अप्रैल को बोया गया पटसन (फसल अवधि 120-130 दिन)

- किसानों को सलाह दी जाती है कि फसल की कटाई तुरंत की जाए। कटाई उपरांत कटे हुए फसल को पत्ती झड़ने के लिए 3-4 दिनों के लिए खेत में छोड़ा जाना चाहिए, क्योंकि पत्तियाँ सड़ने के बाद, मिट्टी में, कुछ कार्बनिक पदार्थ एवं पोषक तत्वों का योगदान करती हैं।
- जाक के ऊपर कभी भी कीचड़ या केले का थंब व्यवहार नहीं करना चाहिए। जाक के ऊपर कीचड़ या मिट्टी के सीधे उपयोग से बचना चाहिए, इसके बजाय, किसान पुराने सीमेंट या उर्वरक बैग में कीचड़ या मिट्टी को वजन सामग्री के रूप में रख सकते हैं। पुनः व्यवहार योग्य प्लास्टिक के थैले में पानी भर कर भी वजन सामग्री के रूप में व्यवहार किया जा सकता है।
- अगर जल कुंभी उपलब्ध हो तो इसे भी वजन सामग्री के रूप में व्यवहार किया जा सकता है। इससे रेशे की गुणवत्ता भी बढ़ती है।
- गुणवत्ता में सुधार, त्वरित सड़न और उच्चतम रेशे की प्राप्ति के लिए 4 किलोग्राम/बीघा की दर से "क्राइजैफ सोना" पाउडर का प्रयोग कर सकते हैं। जाक की तैयारी के दौरान, पटसन बंडल के प्रत्येक परत पर "क्राइजैफ सोना" का प्रयोग किया जाना चाहिए, पौधों के निचले हिस्से में अधिक मात्रा में पाउडर डालना चाहिए और इसके शीर्ष भाग में कम।
- "क्राइजैफ सोना" प्रयोग करने वाले कृषक, रेशा को अत्यधिक सड़न से बचाने के लिए, जाक को 8-10 दिनों के बाद जाँच करें।
- सड़न पश्चात रेशा को डंठल से छुड़ा कर साफ पानी में धोकर उसे धूप में सूखा लें ताकि इसमें 10 % से अधिक नमी ना रहे।



1



2

1. "क्राइजैफ सोना" प्रयोग करने के 10 दिनों के बाद जाक को जाँच करें
2. उचित सड़न प्रक्रिया के लिए जाक को पानी में डूबा रहना चाहिए



120 दिन की फसल की कटाई और उससे पत्ती झड़ने के लिए 3-4 दिनों के लिए जमीन में ही छोड़ना



नजदीकी जलाशय में जाक बनाने की तैयारी



जल कुंभी (उपलब्ध हो तो) का वजन सामग्री के रूप में व्यवहार से रेशे की गुणवत्ता भी बढ़ती है।

3. पटसन एवं मेस्ता के खेती के मूल स्थान पर तालाब आधारित खेती प्रणाली

➤ अनियमित वर्षा वितरण, सड़न के लिए सामुदायिक तालाब की अनुपलब्धता, प्रति व्यक्ति जल संसाधन में हास, बढ़ती मजदूरी, बढ़ती लागत, पटसन सड़ाने के समय नदी, तालाब, पोखर इत्यादि में पानी कम होना या सूखा होना- इन सब कारणों की वजह से पटसन और मेस्ता के किसानों को सड़न के समय बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। खराब पानी में सड़न के कारण रेशे की गुणवत्ता खराब हो जाती है और इसलिए ये अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कहीं नहीं ठहरती।

➤ इन सारी समस्याओं से निजात पाने के लिए, वर्षा ऋतु से पहले, किसान खेती के मूल स्थान पर ही तालाब आधारित खेती प्रणाली को अपनाकर पटसन एवं मेस्ता खेती को लाभजनक बना सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, पटसन उगाने वाले राज्यों में उच्च वार्षिक वर्षा (1200-2000 मिमी) होती है, परंतु इसका 30-40 % ऐसे ही बेकार बह जाता है। इस पानी को अगर हम खेत के निचले हिस्से के तरफ एक तालाब बनाकर जमा करें तो इसका उपयोग हम पटसन / मेस्ता सड़ाने के लिए कर सकते हैं।

एक एकड़ पटसन खेत के लिए तालाब का डिजाईन और सड़न प्रक्रिया:

- तालाब का 40 फीट x 30 फीट x 5 फीट होना चाहिए जो कि एक बार में आधे एकड़ के पटसन को सड़ाने के लिए काफी है। इस तालाब में एक एकड़ पटसन को दो बार में सड़या जा सकता है। इस तालाब के मेड़/ बाँध काफी चौड़ा (1.5-1.8 मी) होना चाहिए ताकि उसपर पपीता, केला इत्यादि लगाया जा सके।
- इसको LDPE एग्री-फिल्म (150-300 माइक्रोन)से स्तर करना चाहिए ताकि रिसाव एवं बहाव द्वारा जल की हानि कम से कम हो।
- एक बार में तीन जाक बना कर रखना चाहिए और प्रत्येक जाक में तीन स्तर होने चाहिए। जमीन और जाक में कम से कम 20-30 सेंमी का गैप होना चाहिए और जाक के ऊपर भी 20-30 सेंमी पानी होना चाहिए।

खेती के मूल स्थान पर सड़न तालाब के लाभ

- कटे हुए पटसन बंडलों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में प्रति एकड़ 3500-4000 रुपया की बचत होती है।
- क्राइजैफ सोना (14 किलोग्राम / एकड़) के प्रयोग से 12-15 दिनों में ही पटसन सड़ जाता है जबकि पारंपरिक विधि में 18-21 दिन लगता है। दूसरी बार में पाउडर की मात्रा आधी हो जाती है, अर्थात् यहाँ भी 400 रुपया की बचत।
- सड़न के समय, धीरे बहते हुए बरसाती पानी के कारण रेशा की गुणवत्ता में 1-2 ग्रेड की बढ़ोत्तरी होती है।

सड़न के अलावा इस पानी का उपयोग बहु-प्रकार से किया जा सकता है

- इस तालाब के मेड़/ बाँध पर फलदार वृक्ष - पपीता, केला, सामयिक सब्जियों की खेती कर के 10000 - 12000 रुपया तक कमाया जा सकता है।
- इस तालाब में हम, हवा में साँस लेने वाली मछली (तेलपिया, सिंघी, मागुर), का पालन कर 50 - 60 किलो तक मछली प्राप्त कर सकते हैं।
- इस प्रणाली में मधुमक्खी पालन (जिससे करीब 7000 रुपया तक का अतिरिक्त आमदनी किया जा सकता है) भी किया जा सकता है; जिसके कारण परागण क्रिया में भी बढ़ोत्तरी होती है।
- इसके साथ मशरूम और वर्मिकोपोस्टिंग भी किया जा सकता है।
- इस तालाब में 50 बतखों को पाला जा सकता है जिसके कारण 5000 रुपया की अतिरिक्त आमदानी होगी।
- पटसन सड़न के बाद बचे हुए पानी का उपयोग अन्य फसलों में अतिरिक्त सिंचाई के रूप में किया जा सकता है और ऐसा करके प्रति एकड़ 4000 रुपया की अतिरिक्त आमदानी होगी।

इस तरह से पटसन खेत में एक स्थायी तालाब बनाकर और 1000 - 1200 रुपया के पटसन का नुकसान कर हम मिश्रित खेती कर 30,000 रुपया की अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। कटे हुए पटसन बंडलों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में प्रति एकड़ करीब 5000 की बचत होती है। इस तकनीक से चरम मौसम की घटनाओं, जैसे की सूखा, चक्रवात, बाढ़ इत्यादि के नकारात्मक प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है।



क्राइजैफ प्रक्षेत्र में स्थापित पटसन एवं मेस्ता के खेती के मूल स्थान पर तालाब आधारित खेती प्रणाली

पटसन सड़न हेतु अस्थायी तालाब :

- जिन जगहों पर पटसन सड़न हेतु जल उपलब्ध नहीं है वैसे जगहों पर अस्थायी तालाब का निर्माण किया जा सकता है। एक बीघा (0.13 हे) पटसन के लिए तालाब, 10 मी X 8 मी X 1 मी, का होना चाहिए। तालाब के चारों तरफ 3 फीट ऊंची मेड़ बनानी चाहिए और इसे टरपोलिन (250 GSM) द्वारा स्तर कर देना चाहिए।
- तालाब में पटसन डालने से तीन दिन पहले उसमें पानी भर देना चाहिए। इसके बाद उसमें 50 किलोग्राम सनई की टहनी, किसी पुराने सड़न तालाब से 100 किलोग्राम कीचड़, एक किलो अमोनियम सल्फेट व एक किलो मोलासेज डालना चाहिए ताकि उसमें जल्दी से सुक्ष्मजीवियों का विकास हो।
- पटसन बंडल को तीन स्तर में सीधा-उल्टा कर बिछा देना है। इसके ऊपर भारी सामग्री के हिसाब से मिट्टी से भरे सिमेंट बोरे को डाल देना है।
- रेशा छुड़ाने से पहले उसमें से गंदे पानी को निकाल कर फ्रेश पानी को डालना चाहिए ताकि गंदा पानी (सड़ित पानी) बाहर आ जाये। इस विधि से पटसन 20-27 दिनों में सड़ता है।
- क्राइजेफ सोना (4 किलोग्राम) के व्यवहार से सड़ने की अवधि में 4-5 दिन कम लगता है।
- रेशा निष्कर्षण के पश्चात मेड़ को तोड़ कर तालाब के सतह को पडलिंग कर उसमें धान की रोपाई करनी चाहिए ।



पटसन सड़न हेतु अस्थायी तालाब का निर्माण



सड़न हेतु तालाब में जाक देना

4. 20 अप्रैल के बाद बोई गई पटसन (फसल अवधि : 100 – 120 दिन)

- किसानों को सलाह दी जाती है कि फसल की कटाई समय पर (120 दिन की फसल) की जाए। कटाई उपरांत कटे हुए फसल को पत्ती झड़ने के लिए 3-4 दिनों के लिए खेत में छोड़ा जाना चाहिए, क्योंकि पत्तियां सड़ने के बाद केछ पोषक तत्वों का योगदान करती हैं। आसान सड़न प्रक्रिया के लिए छाड़ पाट / खींच पाट (1.5 मी से कम) को छांट कर अलग कर लेना चाहिए।
- जाक के ऊपर कभी भी कीचड़ या केले का थंब व्यवहार नहीं करना चाहिए। जाक के ऊपर कीचड़ या मिट्टी के सीधे उपयोग से बचना चाहिए, इसके बजाय, किसान पुराने सीमेंट या उर्वरक बैग में कीचड़ या मिट्टी को वजन सामग्री के रूप में रख सकते हैं। पुनः व्यवहार योग्य प्लास्टिक के थैले में पानी भर कर भी वजन सामग्री के रूप में व्यवहार किया जा सकता है। अगर जल कभी उपलब्ध हो तो इसे भी वजन सामग्री के रूप में व्यवहार किया जा सकता है। इससे रेशे की गुणवत्ता भी बढ़ती है।
- गुणवत्ता में सुधार, त्वरित सड़न और उच्चतम रेशे की प्राप्ति के लिए 4 किलोग्राम/बीघा की दर से "क्राइजेफ सोना" पाउडर का प्रयोग कर सकते हैं। जाक की तैयारी के दौरान, पटसन बंडल के प्रत्येक परत पर "क्राइजेफ सोना" का प्रयोग किया जाना चाहिए, पौधों के निचले हिस्से में अधिक मात्रा में पाउडर डालना चाहिए और इसके शीर्ष भाग में कम।



1. 120 दिन पुरानी फसल की कटाई



2. पत्ती बहा के लिए बंडल बनाना



3. जाक की तैयारी



4. गुणवत्ता को बनाए रखने और रेटिंग अवधि को कम करने के लिए जाक के ऊपर "क्राइजैफ सोना" का प्रयोग



5. जाक को जलमग्न करने के लिए जाक के ऊपर सीमेंट की थैली में लोड (रेत / पत्थर / मिट्टी आदि) का प्रयोग



6. वैकल्पिक भार यानी प्लास्टिक की थैली में पानी इसे डूबाने के लिए जाक के ऊपर रखा जाता है

5. अप्रैल के अंतिम सप्ताह में बोई गई पटसन (फसल अवधि : 95-105 दिन)

- किसानों को सलाह दी जाती है कि यदि फसल की कटाई समय पर (120 दिन की फसल की उम्र) की जाती है तो फसल सुरक्षा उपाय न करें। हालांकि, देर से पकने वाली फसल में बालों के कैटरपिलर के सक्रमण और प्रकोप पर उन्हें सतर्क रहना चाहिए।
- इस अवस्था में जलभराव तना सड़न / जड़ सड़न को बढ़ा सकता है। इसलिए, उचित जल निकासी के माध्यम से पानी निकालें। प्रभावित पौधों (जिसका बहुत पतला तना हो) को हटा दें क्योंकि इससे हमें रेशे की कुछ खास प्राप्ति नहीं होती है।
- जल जमाव वाले निचले क्षेत्रों में जहाँ जल निकास संभव नहीं है, कृषक 100 दिन पुराने पटसन के पौधों की कटाई कर 80% तक सामान्य उपज प्राप्त कर सकते हैं। इसके द्वारा पटसन उत्पादन के लागत की आंशिक भरपाई हो सकती है। यह असाधारण अभ्यास निवेश से वापसी को पूरा कर सकता है। जैसे पानी का ठहराव होता है, वैसे ही खेत में पत्ती के लिए फसल को रखना संभव नहीं होता है, ऐसे में रेटिंग टैंक में पानी की गहराई के आधार पर 2 से 3 परतों में " जाक " तैयार करें।
- केले के तने का उपयोग जाक के ऊपर सामग्री को कवर करने के लिए न करें। जाक के ऊपर मिट्टी या मिट्टी के सीधे उपयोग से भी बचा जाना चाहिए, इसके बजाय, किसान पुराने सीमेंट या उर्वरक बैग में मिट्टी या मिट्टी को वजन सामग्री के रूप में रख सकते हैं। जाक के ऊपर केले के तने और कीचड़ का प्रत्यक्ष उपयोग बहुत कम फाइबर गुणवत्ता के साथ काले रंग के जूट फाइबर का उत्पादन करेगा।
- किसान तेजी से रेटिंग के साथ गुणवत्ता में सुधार और उच्च फाइबर वसूली के लिए 4 किलो / बीघा "क्राइजैफ सोना" कटे हुए जूट के पौधों के साथ का उपयोग कर सकते हैं। जूट के पौधों की प्रत्येक परत पर जाक की तैयारी के दौरान "क्राइजैफ सोना" पाउडर लगाया जाना चाहिए, इस तरह से, जूट के पौधों के बेसल भाग टर्मिनल भाग की तुलना में अधिक मात्रा में "क्राइजैफ सोना" पाउडर लगाया जाना चाहिए।



उत्तर 24 परगना में 110 दिनों की पटसन फसल



हुगली में 100 दिनों की पटसन फसल



वर्षा के बाद, उच्च तापमान व आर्द्रता के कारण रोयेंदार कैटरपिलर का संक्रमण बढ़ जाता है। यह बहुत तेजी से फैलता है। संक्रमण रोकने के लिए अपने खेत की नियमित निगरानी करें और गुच्छों में आये अंडों के समूह और नये लार्वा को तुरंत हटाएँ। अत्यधिक संक्रमण के मामलों में लैम्ब्डा साइहलोथिन 5 ई सी @ 1मिली / ली या इंडोक्साकार्ब 14.5 एस सी @ 1मिली / ली का छिड़काव करें।



निरंतर जल-जमाव से उत्पन्न स्थिति में 90-100 दिनों के फसल की कटाई कर लेनी चाहिए



कटाई उपरांत नजदीकी जल स्रोतों में बंडल डालकर जाक बनाते हुए

6. अप्रैल के अंतिम सप्ताह में बोई गई पटसन (फसल अवधि : 85-95 दिन)

- वर्षा के बाद, उच्च तापमान व आर्द्रता के कारण रोयेंदार कैटरपिलर का संक्रमण बढ़ जाता है। पत्ती के सतह के नीचे डिम्ब समूह और नवजात लार्वा दिखाई देते हैं। यह कीट बहुत जल्दी फैलता है और पत्तियों को नुकसान पहुंचाता है। प्रारम्भिक संक्रमण को रोकने के लिए अपने खेत की नियमित निगरानी करें। गुच्छों में निकले डिम्ब समूह और नवजात लार्वा को तुरंत हटाएँ। अत्यधिक संक्रमण के मामलों में लैम्ब्डा साइहलोथिन 5 ई.सी @ 1 मिली/ली या इंडोक्साकार्ब 14.5 एस.सी @ 1मिली/ली का छिड़काव करें।
- अन्य कीट सेमिलूपर सभी पटसन उत्पादक राज्यों में पत्तियों को नुकसान पहुंचाता है। ये पतला, हरा रंग का लार्वा है जिसका सिर हल्का पीला होता है और पीठ पर गहरे हरे रंग की धारियाँ होती हैं। ये लूप के तरीके से रेंगता है। पचास से अस्सी दिनों के फसल में इसकी समस्या अधिक होती है। इसका नुकसान (आडीनुमा कटे पत्ते) शीर्ष के नौ अधखुली पत्तियों तक सीमित होता है। कभी-कभी क्षतिग्रस्त तनों से शाखाएँ निकल जाती हैं। अगर सेमिलूपर द्वारा 15% से अधिक नुकसान हो तो कोई संपर्क कीटनाशी जैसे कि प्रोफेनोफोस 50 ई सी @ 2 मिली /ली, फेनवालेरेट 20 ई.सी @ 1 मिली /ली या साइपरमेथिन 25 ई.सी @ 0.5 मिली /ली का प्रयोग करें। कीटनाशक का छिड़काव हमेशा पौधे के ऊपरी हिस्से की ओर होनी चाहिए ना की पूरे पौधे पर।
- शुष्क एवं आर्द्र दशा में मैक्रोफोमिना फेजीओलीना कवक द्वारा पत्तियों एवं इसके किनारे हिस्सों से तना सड़न रोग होने की संभावना होती है। करीब 20 दिनों के अंतराल पर संपर्क कवकनाशी कार्बेन्डाजिम @ 2 ग्राम/ली का एक पर्ण छिड़काव करना चाहिए। जल जमाव होने पर इसका संक्रमण बढ़ता है अतः जल निकास का प्रावधान जरूरी है।
- जल जमाव वाले निचले क्षेत्रों में जहाँ जल निकास संभव नहीं है, कृषक 90-100 दिन पुराने पटसन के पौधों की कटाई कर 70% तक सामान्य उपज प्राप्त कर सकते हैं। इसके द्वारा पटसन उत्पादन के लागत की आंशिक भरपाई हो सकती है। रेटिंग टैंक में पानी की गहराई के आधार पर 2 से 3 परतों में " जाक " तैयार करें। सीधे जाक के ऊपर केले के तने और मिट्टी या मिट्टी का उपयोग न करें। तेजी से रेटिंग और गुणवत्ता वाले फाइबर के लिए "क्राइजैफ सोना" @ 4 किग्रा / बीघा का उपयोग करें।

- किसान तेजी से रेटिंग के साथ गुणवत्ता में सुधार और उच्च फाइबर प्राप्ति के लिए 4 किलो / बीघा “क्राइजैफ सोना” कटे हुए जूट के पौधों के साथ का उपयोग कर सकते हैं। जूट के पौधों की प्रत्येक परत पर जाक की तैयारी के दौरान “क्राइजैफ सोना” पाउडर लगाया जाना चाहिए, इस तरह से, जूट के पौधों के बेसल भाग टर्मिनल भाग की तुलना में अधिक मात्रा में “क्राइजैफ सोना” पाउडर लगाया जाना चाहिए।



90-100 दिनों की पटसन फसल

वर्षा के बाद, उच्च तापमान व आर्द्रता के कारण रोयेंदार कैटरपिलर का संक्रमण बढ़ जाता है। यह बहुत तेजी से फैलता है। संक्रमण रोकने के लिए अपने खेत की नियमित निगरानी करें और गुच्छों में आये अंडों के समूह और नये लार्वा को तुरत हटाएँ। अत्यधिक संक्रमण के मामलों में लैम्ब्डा साइहलोथिन 5 ई सी @ 1मिली / ली या इंडोक्साकार्ब 14.5 एस सी @ 1मिली / ली का छिड़काव करें।



निरंतर जल-जमाव से उत्पन्न स्थिति में 80-90 दिनों के फसल की कटाई कर लेनी चाहिए

साधारणतया केवल 5 - 10 % तना / जड़ सड़न का संक्रमण देखा जाता है लेकिन जलजमाव के कारण संक्रमण बढ़ जाता है। इसलिए, जमीन से तुरंत जल निकासी कर संक्रमित पौधे को हटा देना चाहिए ताकि बढ़ते संक्रमण को रोका जा सके और सड़न के पश्चात सुगमता से रेशा निष्कर्षण किया जा सके।



III. समवर्गीय रेशों के लिए कृषि परामर्श

अ) सीसल

माध्यमिक नर्सरी की तैयारी एवं सीसल का रखरखाव :

- जिन किसानों ने माध्यमिक नर्सरी बना ली है, वे समुचित जल निकासी व्यवस्था और खरपतवार मुक्त रखने पर ध्यान दें। अन्तः सस्य प्रक्रिया कर मेंकोजेब 72 % डब्लू. पी. (0.25%) + मेटाक्सिल 25 % का छिड़काव करना चाहिए। सीसल की खाद पोषक तत्वों की आपूर्ति के साथ-साथ खरपतवार के बढ़वार को रोकने में सक्षम होती है।
- जिन किसानों ने अभी तक माध्यमिक नर्सरी नहीं लगाई है वे प्राथमिक नर्सरी में उगाये गये बुलबिल्स को 50 x 25 सेंमी की दूरी पर माध्यमिक नर्सरी में रोपें। बुलबिल्स के पुराने पत्तियों को छाँट कर एवं इसके जड़ को मेंकोजेब 64 % + मेटाक्सिल 8 % @ 2.5 ग्रा./ ली. पानी के साथ 20 मिनट तक उपचारित करना चाहिए। एक हेक्टर पर क्षेत्रफल वाले नर्सरी में 80 हजार बुलबिल्स उगाये जा सकते हैं, जिनमें से समान्यतः 72,000-60,000 बुलबिल्स जीवित बच जाते हैं। अनुमान के तौर पर माध्यमिक नर्सरी में 5-10 % बुलबिल्स नष्ट हो जाते हैं।
- डिब्लर की मदद से बुलबिल की रोपाई 5-7.5 सेंमी की गहराई में करनी चाहिए। इनकी रोपाई इस तरह होनी चाहिए जिससे की जड़ का ऊपरी भाग सतह पर रहे। हरेक ग्यारहवीं पंक्ति को खाली रखना चाहिए ताकि निराई एवं अन्य अन्तः सस्य क्रिया आसानी से पूरी की जा सके।
- माध्यमिक नर्सरी में लगाए गये सकर की अच्छी वृद्धि के लिए खेत तैयार करते वक्त सीसल खाद या खेत सड़ित खाद @ 5 टन / हे. और एन.पी.के 60:30:30 कि. ग्रा./ हे. प्रयोग करना चाहिए। नत्रजन का प्रयोग तीन बार में करना चाहिए - पहला तिहाई आधारीय, दूसरा तिहाई निराई (रोपाई के 28 दिनों के बाद) और अंतिम तिहाई रोपाई के 50-55 दिनों के बाद। हाइब्रिड सीसल के लिए भी यही प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए।

मुख्य भूमि से सकर संग्रह:

- सामान्यतः हम प्राथमिक नर्सरी में बुलबिल्स लगाते हैं फिर उसे माध्यमिक नर्सरी में उगा कर सकर के रूप में रोपण सामग्री तैयार करते हैं। इस सकर को फिर मुख्य भूमि में लगाया जाता है। इसके अलावा पुराने प्लैटेशन से भी सीधे सकर प्राप्त होता है। प्रति वर्ष मुख्य प्लैटेशन से 2-3 सकर प्राप्त होता है जिसे सीधे तौर पर मुख्य भूमि में लगाया जा सकता है। सकर को वर्षा ऋतु आरंभ होने के बाद उखाड़ा जाता है। रोपण से पहले सकर के पुराने क्षतिग्रस्त पत्तियों एवं जड़ को छाँट कर हटा दिया जाता है। छटाई के समय ध्यान देना चाहिए कि सकर का शीर्ष वाला हिस्सा को कोई नुकसान न पहुँचे।

नये सीसल प्लैटेशन का रखरखाव:

- एक से दो वर्ष पुराने सीसल के प्लैटेशन में निराई का उद्देश्य पानी और पोषक तत्वों का बेहतर सदुपयोग है। सीसल में जेब्रा या अलटेरनेरिया लीफ स्पॉट रोग प्रकट होने पर कौपर औकसीक्लोराइड @ 3.0 ग्रा./ ली. या मेंकोजेब 64 % + मेटाक्सिल 8 % @ 2.5 ग्रा. / ली. पानी के साथ छिड़काव करना चाहिए। जिन्होंने अब तक खाद एवं उर्वरक नहीं डाला है, उन्हें सीसल खाद @ 2 टन/ हे. और एन.पी.के 60 : 30: 30 कि. ग्रा./ हे. रोपाई के तुरंत बाद देना चाहिए।



हाइब्रिड सीसल प्लैटेशन

माध्यमिक नर्सरी में अंतः सस्य प्रक्रिया

नये सीसल प्लैटेशन का रखरखाव

सीसल के जेब्रा रोग में कवकनाशी का छिड़काव

सीसल प्लांटेशन का मुख्य भूमि में रोपण:

- माध्यमिक नर्सरी में उगाये गये सकर को मुख्य भूमि में पुराने पत्तियों को छाँटने एवं इसके जड़ को मैकोजेब 64 % + मेटाक्सिल 8 % @ 2.5 ग्रा./ ली. पानी में 20 मिनट तक उपचारित करने के बाद रोपना चाहिए। एक नुकीले लकड़ी से गड्ढे में छेद करके सकर को बीचों बीच रोपना चाहिए। सकर की रोपाई इस तरह होनी चाहिए जिससे की जड़ का ऊपरी भाग सतह पर रहे। सकर की लंबाई 30 सेमी, वजन 250 ग्राम और 5-6 पत्तियों वाला होना चाहिए। सकर स्वस्थ एवं रोगमुक्त होना चाहिए।
- सीसल की अच्छी वृद्धि के लिए सीसल का सड़ा हुआ खाद @ 5 टन/ हे. और एन.पी.के. 60 : 30 : 30 कि.ग्रा. /हे. प्रयोग करना चाहिए। नत्रजन का प्रयोग दो बराबर हिस्सों करना चाहिए – पहला मौनसून से पहले , दूसरा मौनसून के बाद ।
- जिन किसानों ने अभी तक मुख्य भूमि का चयन नहीं किया है, उन्हें सीसल रोपण के लिए बेहतर जल निकास वाले भूमि का चयन करना चाहिए जिसमें कम से कम 15 से.मी. तक मिट्टी हो। जब सीसल का रोपण ढालुवा जमीन में हो तो पूरे जमीन की खुदाई आवश्यक नहीं है।
- मुख्य भूमि में क्षेत्र निर्धारण, झाड़ी एवं खरपतवार के सफाई के बाद एक घन फुट के गड्ढे को 3.5 मी.+ 1 मी. x 1 मी. की दूरी पर बनाना चाहिए ताकि सीसल की रोपाई द्विपंक्तिय विधि से हो सके। करीब 4,500 सकर/हे. की आवश्यकता होती है। प्रतिकूल परिस्थिति में 3.0 मी.+ 1 मी. x 1 मी. की दूरी पर रोपाई हेतु करीब 5,000 सकर/ हे. की आवश्यकता होती है।
- गड्ढे को मिट्टी और सीसल खाद या खेत सड़ित खाद से भरना चाहिए ताकि मिट्टी छिद्रयुक्त हो जाय। अम्लीय मिट्टी में कली चूना @ 2.5 टन/ हे. प्रयोग करना चाहिए और गड्ढे में इतनी मिट्टी भरनी चाहिए की सतह से 1-2 इंच ऊपर रहे और सकर को जमने में आसानी हो।
- मृदा क्षरण रोकने के लिए सीसल सकर की रोपाई कंटूर के समानान्तर तथा ढलान के विपरीत करना चाहिए। सकर के बेहतर अस्तित्व के लिए ढेर में रखने के बजाय छाया के नीचे एक परत में रखना बेतार होता है। सकर की रोपाई संग्रहण के 45 दिनों के अंदर पूरा कर लेना चाहिए। वांछित पौध संख्या तथा पौधों के बीच अंतराल को भरने हेतु कम से कम 100 सकर/हे. सुरक्षित रखना चाहिए।

सीसल प्लांटेशन में अंत: खेती:

- किसानों को अधिक आय के लिए द्वी पंक्तिय सीसल प्लांटेशन वाले प्रणाली में पंक्तियों के बीच में दलहनी फसल जैसे उड़द को अतिरिक्त आमदनी के लिए उगाना चाहिए। इससे मृदा क्षरण व खरपतवार के वृद्धि में कमी, नट्रोजन स्थिरीकरण भी होता है। इसके अलावा सीसल के पंक्तियों के बीच सब्जी फसल जैसे बैंगन, टमाटर, रीज गार्ड को अतिरिक्त आमदनी के लिए भी लगाया जा सकता है।



सीसल पंक्तियों के बीच अंत: खेती 1. टमाटर 2. उड़द 3. बैंगन 4. फल के पौधे

ब) रेमी



- इस समय घास के समान खरपतवार प्रबन्धन हेतु क्विजलोफोप इथाईल 5% EC @ 1.0 मि. ली./ली. का छिड़काव बेहतर है ।
- खेत में इंडियन एडमिरल कैटरपीलर, हेयरी कैटरपीलर, लेडी बर्ड बीटल्स, दीमक, लीफ बीटल और लीफ रौलर जैसे कीट दिखाई दे सकते हैं , जिसके रोकथाम हेतु क्लोरपायरीफॉस 0.04% के छिड़काव की सलाह दी जाती है । इस समय सर्कोरा लीफ स्पॉट, स्क्लेरोटीयम सड़न, एनथ्रोक्नोज लीफ स्पॉट, डेम्पिंग औफ एवं येलो मोजाईक रोग के दिखाई देने पर मेंकोजेब @ 2.5% मि.ली./ली. या प्रोपिकोनजोल 1 % मि.ली./ ली. का छिड़काव करना चाहिए । छिड़काव हेतु निर्णय रोग एवं व्याधि के निरंतर निगरानी के बाद ही लिया जाना चाहिए ।
- इन क्षेत्रों में मध्यम से भारी गरज के साथ वर्षा होने की संभावना होती है । यह फसल जल जमाव के प्रति संवेदनशील हैं, इसलिए खेत में समुचित जल निकासी का उपाय रखना चाहिए ।
- कुछ खेतों में जल जमाव के कारण पत्तियाँ पीली दिखाई पड़ती है । फसल को नुकसान से बचाने हेतु अतिरिक्त जल के निकास की सलाह दी जाती है ।



रेमी प्लानटेशन



रेमी फसल की कटाई



रेमी रेशा निष्कर्षण



अचयनित शाकनाशी पाराक्वाट का छिड़काव



रेमी फसल में जल जमाव का तुरंत



निष्कर्षण के बाद रेमी रेशा (गोंद रहित)

सी) सनई

1. 20 अप्रैल में बोई गई सनई की फसल (फसल अवधि : 105-110 दिन)

- किसानों को सलाह दी जाती है कि वे सड़न प्रक्रिया पूरी हुई या नहीं इसे देख लें, अगर सड़न प्रक्रिया पूरी हो गई है, तो अतिरिक्त लिग्निन को हटाने के लिए बंडलों को पानी के ऊपर ही 3 से 4 बार पटका जाता है और पानी में ही उसे ऊपर नीचे किया जाता है।
- रेशों और छड़ी से अतिरिक्त पानी को निकालने के लिए बंडलों को सीधा खड़ा किया जाता है। बंडलों को धूप में सुखाने के बाद रेशों को प्रत्येक पौधे से लंबी पट्टी में नीचे से ऊपर की तरफ हाथ से निकाला जाता है। निकाले गए रेशों को फिर से धूप में सुखाया जाता है और बाज़ार में ले जाने के लिए उनके बंडल बना दिये जाते हैं।



1. बंडलों को पानी में डालना 2. रेशों को धोना 3. रेशों को अलग करना 4. रेशों को सुखाना

2. जिन किसानों ने 20 अप्रैल के बाद बुवाई की है (फसल अवधि : 95-105 दिन)

- फसल को 90-100 दिन पूरे होने पर काटा जा सकता है। फसल को दराती की मदद से काटकर उन्हें 15-20 सेंटीमीटर व्यास के छोटे बंडलों में बांधकर रखने से सड़न और धोने की सुविधा आसान हो जाती है। पौधों के ऊपरी भाग को काटकर या तो पशुओं के चारे के रूप में या मिट्टी में हरी खाद के लिए उपयोग किया जाता है।
- फिर बंडलों को टैंक के पास ले जाकर उन्हें एक के पास एक करके रख दिया जाता है और सड़न के लिए बांस, पत्थरों या लकड़ी के लॉग की मदद से गहरे पानी (20-25 सेमी) में दबाया जाता है। उचित सड़न के लिए आमतौर पर प्रचलित तापमान के आधार पर 3-5 दिनों की आवश्यकता होती है। लकड़ी से छाल को अलग करके सड़न प्रक्रिया की पूर्णता को जाँचा जाता है।



3. जिन किसानों ने अप्रैल के अंतिम सप्ताह में सनई की बुआई की है (फसल अवधि: 85-95 दिन)

- मौसम में अत्यधिक वर्षा से होने वाले जल जमाव को दूर करने के लिए पर्याप्त जल निकास होना चाहिए अन्यथा वेसकुलर विल्ट की समस्या बढ़ सकती है। अतिरिक्त जल को ढलाव के अनुरूप छोटे गड्ढे द्वारा जल निकास कर देना चाहिए।
- लगभग 100 दिनों में कटाई के बाद जाक बनाने के लिए पास में ही एक तालाब तैयार करें।

कटाई करना, बंडल बनाना और जाक बनाना



भूमि से अतिरिक्त जल की निकासी

डी) मेस्ता

1. मई के अंतिम सप्ताह में मेस्ता की बुवाई (फसल अवधि: 70 दिन)

- पानी जमा ना होने दें और निकासी की व्यवस्था रखें जिससे फसल जैविक और अजैविक दबावों से मुक्त रहे । अतिरिक्त पानी जड़ एवं तना सड़न को बढ़ाता है । पौधों के निचले हिस्सों में कॉपर औक्सीक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।
- फोमा लीफ ब्लाइट, एक सामान्य बीमारी जो पत्तियों के बाहरी किनारे से बढ़ते हुये अंदर तक जाती है । गंभीर अवस्था में पौधों की सारी पत्तियाँ गिर जाती है । सुरक्षा के तौर (>5%) पर कॉपर औक्सीक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. या मेंकोजेब @ 2 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।



70-80 दिनों की फसल

2. जून के प्रथम सप्ताह में मेस्ता की बुवाई (फसल अवधि: 60-70 दिन)

- पानी जमा ना होने दें और निकासी की व्यवस्था रखें जिससे फसल जैविक और अजैविक दबावों से मुक्त रहे । अतिरिक्त पानी जड़ एवं तना सड़न को बढ़ाता है । पौधों के निचले हिस्सों में कॉपर औक्सीक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।
- फोमा लीफ ब्लाइट, एक सामान्य बीमारी जो पत्तियों के बाहरी किनारे से बढ़ते हुये अंदर तक जाती है । गंभीर अवस्था में पौधों की सारी पत्तियाँ गिर जाती है । सुरक्षा के तौर (>5%) पर कॉपर औक्सीक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. या मेंकोजेब @ 2 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।



60-70 दिनों की फसल

3. मेस्ता की बुवाई जून के मध्य सप्ताह में (फसल अवधि 40-50 दिन)

- उष्ण और आर्द्र परिस्थिति में वर्षा पश्चात जड़ एवं तना सड़न रोग तेजी से फैलती है । पानी जमा ना होने दें और निकासी की व्यवस्था रखें । पौधों के निचले हिस्सों में कॉपर औक्सीक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।
- फोमा लीफ ब्लाइट, एक सामान्य बीमारी जो पत्तियों के बाहरी किनारे से बढ़ते हुये अंदर तक जाती है । गंभीर अवस्था में पौधों की सारी पत्तियाँ गिर जाती है । सुरक्षा के तौर (>5%) पर कॉपर औक्सीक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. या मेंकोजेब @ 2 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।
- शुष्क अवधि यदि ज्यादा समय तक रहती है तो, मिलीबग का संक्रमण हो सकता है। मिलीबग कॉलोनियों की निगरानी और उन्हें हटाने के बाद यदि उनकी संख्या ज्यादा रहती है तो प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 2 मिली / लीटर का पर्ण छिड़काव किया जा सकता है।



40-50 दिनों की फसल

4. जून के अंतिम सप्ताह में मेस्ता की बुवाई (फसल अवधि 40-50 दिन)

- घास के समान खरपतवार हेतु क्विजलोफोप ईथाईल 5% EC @ 0.1 % छिड़काव के बाद हाथ की एक निराई करें। क्राइजैफ नेल वीडर के स्क्रेपर या सिंगल व्हील जट वीडर द्वारा खेत में मौजूद खरपतवारों को निकालें। निराई के बाद नाइट्रोजन का दूसरा टॉप ड्रेसिंग @ 20 कि.ग्रा./हे. करें।
- उष्ण और आर्द्र परिस्थिति में वर्षा पश्चात जड़ एवं तना सड़न रोग तेजी से फैलती है। पानी जमा ना होने दें और निकासी की व्यवस्था रखें। पौधों के निचले हिस्सों में कापर ऑक्सीक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।
- फोमा लीफ ब्लाइट, एक सामान्य बीमारी जो पत्तियों के बाहरी किनारे से बढ़ते हुये अंदर तक जाती है। गंभीर अवस्था में पौधों की सारी पत्तियाँ गिर जाती है। सुरक्षा के तौर (> 5 %) कापर ऑक्सीक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा. /ली. या मेंकोजेब @ 2 ग्रा./ ली. का छिड़काव करें।



जड़ एवं तना सड़न रोग



मेस्ता की फोमा लीफ ब्लाइट

5. जुलाई के प्रथम सप्ताह में मेस्ता की बुवाई (फसल अवधि 30-40 दिन)

- क्राइजैफ नेल वीडर के स्क्रेपर या सिंगल व्हील जट वीडर द्वारा खेत में मौजूद खरपतवार को हटाएँ तथा नाइट्रोजन का दूसरा टॉप ड्रेसिंग (बुवाई के 40 दिन बाद) @ 20 कि.ग्रा./हे. करें।
- अगर भारी वर्षा होती है तो जल जमाव न होने दें तथा जल निकास का प्रावधान रखें, इससे मृदा जनित रोगों के विस्तार में कमी होती है।
- वर्षा के बाद शुष्क एवं आर्द्र दशा में तना एवं जड़ सड़न रोग बढ़ने की संभावना होती है। जल जमाव न होने दें तथा जल निकास का प्रावधान रखें। कापर ऑक्सीक्लोराइड 50% @ 4-5 ग्रा./ली. या मेंकोजेब @ 2 ग्रा./ली. का छिड़काव पौधों के निचले हिस्सों में करें।
- फोमा लीफ ब्लाइट, एक सामान्य बीमारी जो पत्तियों के बाहरी किनारे से बढ़ते हुये अंदर तक जाती है। आर्द्र दशा में यह बीमारी तेजी से फैलती है। क्षति का स्तर 5% से अधिक होने पर कापर ऑक्सीक्लोराइड 50 % @ 4-5 ग्रा./ली. या मेंकोजेब @ 2 ग्रा./ली. का छिड़काव करें।
- किसानों को फ्ली बीटल के संक्रमण के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी जाती है, जो पत्तों को खाकर उसमें छोटे-छोटे छेद बनाते हैं। इसके लिए इमिडाक्लोरप्रिड 17.8 SC @ 0.3 मि.ली./ली. या प्रोफेनोफास 20 EC @ 2 मि.ली./ली. का छिड़काव करें।
- शुष्क अवधि यदि ज्यादा समय तक रहती है तो, मिलीबग का संक्रमण हो सकता है। मिलीबग कॉलोनियों की निगरानी और उन्हें हटाने के बाद यदि उनकी संख्या ज्यादा रहती है तो प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 2 मिली / लीटर का पर्ण छिड़काव किया जा सकता है।

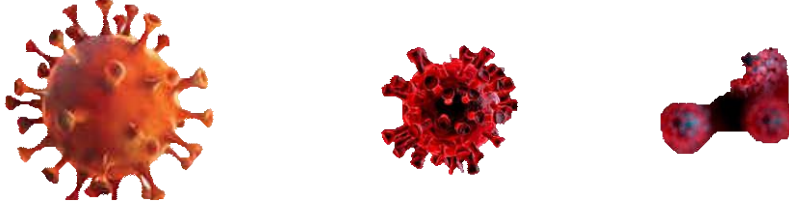


जड़ एवं तना सड़न रोग



मेस्ता की फोमा लीफ ब्लाइट

IV. कोविड -19 वायरस के प्रसार को रोकने के लिए सुरक्षा के उपाय एवं अन्य आवश्यक कदम



- 1) किसानों को क्षेत्र संचालन की पूरी प्रक्रिया जैसे की भूमि तैयारी, बुवाई, निराई, सिंचाई आदि में हर कदम पर सामाजिक दूरी बनाना, साबुन से हाथ धोना, चेहरे पर नकाब पहनना, साफ सुथरे कपड़े पहनकर व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखना, इन सभी सुरक्षा उपायों का पालन करना है।
- 2) पटसन कटाई और जाक को पानी में डालते समय उचित दूरी बनाए रखें एवं चेहरे पर मास्क लगाएँ। इस काम के लिए केवल पहचान वालों को ही काम पर रखें ताकि यथासंभव कोविड - 19 के किसी भी संदिग्ध या संभावित वाहक के प्रवेश से बचा जा सके।
- 3) यदि मशीनों को किसान समूहों द्वारा साझा और उपयोग किया जाता है तो सभी मशीनों जैसे कि सीड ड्रिल, नेल वीडर, सिंचाई पंप, खेत जुताई उपकरण, ट्रैक्टर आदि की उचित स्वच्छता और सफाई बनाए रखें।
- 4) विश्राम के दौरान 3-4 फीट की सुरक्षित दूरी एक दूसरे से बनाए रखें, घर पर ही बीज उपचार, खाद और उर्वरकों की लोडिंग / अनलोडिंग ये सभी काम करें।
- 5) किसी भी संदिग्ध या संभावित वाहक के प्रवेश से बचने के लिए ज्यादा से ज्यादा अपने जान- पहचान वालों से ही क्षेत्र की मोनिटरिंग इत्यादि का काम लें।
- 6) अपने जानने वाली दुकान से ही बीज, उर्वरक, कीटनाशक इत्यादि खरीदा करें और बाजार से लौटने के बाद तुरंत अपने हाथ और शरीर के उजागर भागों को अच्छी तरह साबुन से धोयें। बीज खरीदने के लिए बाजार जाते समय हमेशा फेस मास्क का प्रयोग करें।
- 7) आरोग्य सेतु एप्प को इन्स्टाल करें ताकि आप कोविड -19 से संबन्धित आवश्यक सेवाओं की जानकारी प्राप्त हो सके।

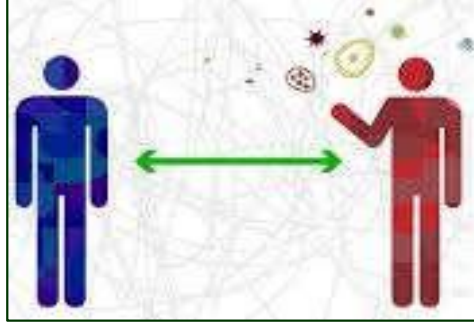


Aarogya Setu

में सुरक्षित | हम सुरक्षित | भारत सुरक्षित



V. जूट मिल श्रमिकों के लिए सलाह



- मिलों को चलाने के लिए, मिलों के भीतर रहने वाले श्रमिक में से ही छोटे-छोटे अवधि की कई शिफ्टों में लगाया जा सकता है।
- सामान्य रूप से मिलों के अंदर पर्याप्त संख्या में वाशिंग पॉइंट दिए जाने चाहिए ताकि श्रमिक बार बार हाथ धो सकें। काम करने के दौरान कार्यकर्ता धूम्रपान न करें।
- वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए अधिक से अधिक बार शौचालय को साफ करना चाहिए।
- श्रमिकों को यह भी सलाह दी जाती है कि वे मिल में काम करते समय दस्ताने, फेस मास्क, जूते, उचित सुरक्षात्मक कपड़ों का उपयोग करें।
- मिल के अंदर, कार्य करने वाले क्षेत्रों को बार बार बदला जाना चाहिए ताकि कर्मियों के बीच सामाजिक दूरी आवश्यकता के अनुसार बनाए रखी जा सके एवं वायरस के संक्रमण को दबाया जा सके।
- जो श्रमिक बार बार काम करने वाली सतहों के संपर्क में आते हैं, वे ज्यादातर समय मशीनों के महत्वपूर्ण भागों को छूते और उन्हें संभालते हैं जैसे स्विच, लीवर आदि उन्हें अपने हाथ की सफाई और साबुन से हाथ धोने में अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। इसके अलावा, इस तरह की सतहों और मशीन भागों से संक्रमित वायरस को हटाने के लिए साबुन के पानी से साफ किया जाना चाहिए।
- उच्च जोखिम वाले वृद्ध श्रमिकों को मिल परिसर के अंदर पृथक स्थानों पर काम करने की अनुमति दी जानी चाहिए ताकि दूसरों के संपर्क में आने की संभावना काफी हद तक कम हो जाए।
- मिल श्रमिकों को टिफिन / दोपहर के भोजन के दौरान इकट्ठा होने से बचना चाहिए, दो व्यक्तियों के बीच कम से कम 6-8 फीट की दूरी बनाए रखनी चाहिए और भोजन लेने से पहले अपने हाथों को अच्छी तरह से धोना चाहिए।
- कोविड संक्रमण से संबंधित किसी भी प्रकार के लक्षणों के मामले में श्रमिकों को तुरंत डॉक्टर या मिल मालिकों को सूचित करना चाहिए।

आपके स्वस्थ और सुरक्षित होने की कामना करते हैं

डॉ. गौरांग कर
निदेशक

भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ)

नीलगंज, बैरकपुर

कोलकाता- 700121, पश्चिम बंगाल

द्वारा संकल्पित एवं प्रकाशित

अभिस्वीकृति: यह संस्थान कृषि परामर्श कमिटी के अध्यक्ष एवं सदस्यों का आभार प्रकट करते हैं। साथ-ही ये फसल उत्पादन, फसल सुधार, फसल संरक्षण के विभागाध्यक्षों एवं ए.आई.एन.पी.एन.एफ और कृषि प्रसार अनुभाग के प्रभारियों का आभार प्रकट करता है। इसके अतिरिक्त, यह संस्थान अपने सभी क्षेत्रीय स्टेशनों के प्रभारी व उनकी टीम, विभिन्न विभागों / अनुभागों के योगदानकर्ता, प्रभारी, ए.के.एम.यू और उनकी टीम का भी आभार प्रकट करता है जिन्होंने इस कृषि सलाह (निर्गत सं. 15 / 2020) को तैयार करने में अपना योगदान दिया है।